मालाबार नीम पेड़ की खेती से कमाये अच्छा लाभ

कृषि कुंभ (जनवरी, 2023),
खण्ड 02 भाग 08, पृष्ठ संख्या 27–28

मालाबार नीम पेड़ की खेती से कमाये अच्छा लाभ

रेशव चहल और डॉ. एस. के वर्मा

शोध छात्र, सह–प्राध्यापक, कृषि एवं वानिकी विभाग,
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अयोध्या, उ.प्र., भारत।

Email Id: rashavchahal@gmail.com

परिचय

मालाबार नीम या मेलिया डबिया इस पेड़ को कई नाम से बुलाया जाता है। मेलियासी वनस्पति परिवार से उत्पन्न, मालाबार नीम यूकेलिप्टस की तरह तेजी से बढ़ता है. यहरोपण से 2 साल के भीतर 40 फुट तक ऊंचाई ले लेता है। कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और केरल के किसान इस पेड़ की फार्मिंग बड़ी संख्या में कर रहे हैं। मालाबार नीम के पौधे की खासियत है कि इसमें ज्यादा खाद व पानी देने की आवश्यकता नहीं होती है. यह सभी प्रकार की मिट्टी में लगता है. पांच साल में ही यह लकड़ी देने लायक हो जाते हैं. इसे खेत की मेड़ पर भी लगा सकते हैं. इसका पौधा एक साल में 08 फीट की ऊंचाई तक बढ़ता है। इसके पौधों में दीमक नहीं लगने से सेप्लाईवुड इंडस्ट्रीज में इसकी सर्वाधिक मांग है।

मालाबार खेती करने लिए आवश्यक भूमि और जलवायु

मालाबार नीम की खेती करने के लिए नेचुरल तत्वों से भरपूर उपजाऊ रेतीली दोमट मिट्टी सबसे अच्छी मानी जाती है। इसके अलावा लैटराइट लाल मिट्टी नीम की खेती के लिए अच्छा विकल्प है.वहीं बजरी मिश्रित उथली मिट्टी इसकी खेती के लिए सबसे खराब मानी जाती है। इसके बीज को मार्च–अप्रैल के दौरान बोना सबसे अच्छा होता है। इसकी खेती करने के लिए जमीन का पीएच मान भी सामान्य होना चाहिए। मालाबार नीम के बीज बोने के लिए मार्च से अप्रैल का महीना सबसे अच्छा माना जाता है।

मालाबार नीम के वृक्षारोपण का प्रबंधन

मालाबार के पौधे लगाने के लिए 8×8 मीटर की दूरी सबसे अच्छी मानी जाती है। इसके अलावा इन्हें 5×5 मीटर की दूरी पर भी लगाया जा सकता है। पौधों के तेजी से विकास के लिए पानी की पूरी व्यवस्था होनी चाहिए। शुरुआत में नमी बनाए रखने के लिए मालाबार नीम के खेत में पानी देते चाहिए और तीन महीने में एक बार खेत में खाद देनी चाहिए। भारी बारिश के दौरान विकास धीमा हो जाता है।

ज्यादा पानी की जरूरत नहीं

मालाबार नीम की खेती सभी तरह की मिट्टी में की जा सकती है। इसकी खेती के लिए ज्यादा पानी की जरूरत नहीं होती। इसकी

बुवाई के लिए मार्च और अप्रैल का महीना सबसे उपयुक्त माना जाता है। नर्सरी में भी इसके पौधे तैयार कर इसकी खेती की जा सकती हैं। दो एकड़ के क्षेत्र में ढाई हजार पौधे लगाए जा सकते हैं। 10 से 15 दिन में एक बार सिंचाई करें।

मालाबार नीम के पेड़ो का उपयोग

मालाबार नीम के उपयोगः लकड़ी का उपयोग पैकिंग के मामलों, सिगार के बक्से, छत के तख्तों, भवन के उद्देश्यों, कृषि उपकरणों, पेंसिल, माचिस, स्प्लिंट्स और कट्टामारम के लिए किया जाता है। सीलोन में, यह नावों के आउटरिगर के लिए कार्यरत है। यह संगीत वाद्ययंत्र, चाय के बक्से और प्लाईबोर्ड के लिए उपयुक्त है।

मालाबार नीम की पैदावार और लाभ

मालाबार नीम के पेड़ों को परिपक्व होने में 6 से 8 साल लगते हैं। जिससे किसान भाई कुछ ही सालों में लाखों कमा सकते हैं। चार एकड़ जमीन में करीब 5000 पेड़ लगाए जा सकते हैं। इसके अलावा बाहरी किनारों पर भी 2 हजार तक पेड़ लगाए जा सकते हैं। इसके पेड़ 6 से 8 साल में कटाई के लिए तैयार हो जाते हैं। 4 एकड़ जमीन में मालाबार नीम के पौधे लगाकर किसान भाई 8 साल में 50 लाख तक कमा सकते हैं।

मिलिया दुबिया के साथ अन्य फसलों की खेती

खास बात है कि किसान मिलिया दुबिया की खेती के बीच में कई अन्य फसलों की पैदावार भी प्राप्त कर सकते हैं. इस किस्म को यूपी के मौसम के अनुसार बहुत उपयुक्त माना गया है. ऐसे में किसानों को इसकी पैदावार से कई फायदे होंगे।

मिलिया दुबिया किस्म से लाभ

यह कई औषधीय गुणों से भरपूर है, इसलिए आम जीवन में इसका खूब उपयोग किया जाता है. बता दें कि इसकी पत्तियां नीम की तरह दिखती हैं. यह त्वचा, पेट, आंखों और विषाणु जनित समस्याओं के लिए लाभकारी है. खास बात है कि इसकी पत्तियों में हर तरह के संक्रमण को रोकने की क्षमता होती है।

कृषि वैज्ञानिकों ने खोजा उपाय

आपको बता दें कि यूपी में जंगलों की संख्या घट रही है, जिससे प्रदूषण की समस्या लगातार बढ़ रही है। इससे किसानों को खेती में भी नुकसान हो रहा है। किसानों को इस समस्या से छुटकारा दिलाने के लिए एक नया उपाय खोजा गया है. दरअसल, किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए अब मिलिया दुबिया की एक नई किस्म पर शोध किया जाएगा, जो कि मिलिया दुबिया की पैदावार को बढ़ाएगी, साथ ही किसानों की आमदनी में भी इजाफा होगा।